प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री कुन्दन कुमार सिंह**, शोध–छात्र, इतिहास विभाग, जगतपुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जगतपुर, वाराणसी (सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर) ने **पी–एच.डी. (इतिहास) उपाधि** हेतु **"बौद्ध धर्म और डॉ. अम्बेडकर"** शीर्षक शोध–प्रबन्ध मेरे निर्देशन में विश्वविद्यालय के नियमानुसार निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत पूर्ण किया है। प्रस्तुत अनुसंधानकार्य इनके व्यक्तिगत अनुशीलन व परिश्रम पर आधारित है तथा पूर्णतया मौलिक है।

निर्देशक

प्रो. शैलेन्द्र प्रसाद पांथरी

जगतपुर पी.जी. कॉलेज,
जगतपुर, वाराणसी

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री कुन्दन कुमार सिंह**, शोध छात्र, इतिहास विभाग ने पी–एच.डी. आर्डिनेंस की धारा 5.2 (7) के अनुसार पूर्ण समय तक कार्य करते हुए **"बौद्ध धर्म और डॉ. अम्बेडकर"** शीर्षक शोध–प्रबन्ध पूर्ण कर लिया है। शोध छात्र के रूप में की गयी खोज के निष्कर्ष उनके व्यक्तिगत श्रम और अनुशीलन (खोज) पर आधृत हैं।

अध्यक्ष
इतिहास विभाग
जगतपुर पी.जी. कॉलेज,
जगतपुर, वाराणसी

प्राचार्य
Principal
जगतपुर पी.जी. कॉलेज
Jagatpur P.G. College
Jagatpur, Varanasi
जगतपुर, वाराणसी

(डॉ. झिनकू यादव)
निदेशक
राष्ट्रीय मानव संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी

निदेशक
राष्ट्रीय मानव संस्कृति शोध संस्थान
83, महामनापुरी कालोनी, आई टी आई. रोड करौंदी,
पो. बी.एच.यू., वाराणसी–5 (उ०प्र०)

जगतपुर पी.जी. कॉलेज,
जगतपुर, वाराणसी

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री कुन्दन कुमार सिंह**, शोध छात्र, इतिहास विभाग ने पी–एच.डी. आर्डिनेंस की धारा 5.2 (7) के अनुसार पूर्ण समय तक कार्य करते हुए **"बौद्ध धर्म और डॉ. अम्बेडकर"** शीर्षक शोध–प्रबन्ध पूर्ण कर लिया है। शोध छात्र के रूप में की गयी खोज के निष्कर्ष उनके व्यक्तिगत श्रम और अनुशीलन (खोज) पर आधृत हैं।

अध्यक्ष
इतिहास विभाग
जगतपुर पी.जी. कॉलेज,
जगतपुर, वाराणसी

प्राचार्य
जगतपुर पी.जी. कॉलेज,
जगतपुर, वाराणसी

Principal
Jagatpur Postgraduate College
Jagatpur, Varanasi

प्राक्कथन

'भारत रत्न' बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर भारत के उन महान सपूतों में से थे जिन्होंने सामाजिक विकास के नये द्वार प्रशस्त किये तथा इतिहास की धारा को नया मोड़ दिया। इतिहास, दर्शन, समाजशास्त्र, विधि, अर्थशास्त्र और पत्रकारिता आदि अनेक विषयों पर असाधारण अधिकार रखने वाले महान् देशभक्त बाबा साहब की चिन्ता का मुख्य विषय यह था कि देश के करोड़ों दलितों–वंचितों को सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार कैसे मिले। उनका साफ–साफ यह मानना था कि यदि देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद भी इन दलितों को अभावग्रस्त तथा अपमानपूर्ण जीवन से मुक्ति नहीं मिली तो इस स्वाधीनता की कोई उपयोगिता नहीं होगा। बाबा साहब मानवाधिकारों के प्रबल प्रवक्ता थे और उन्होंने उन व्यवस्थाओं–मान्यताओं पर प्रहार करने में कदापि संकोच नहीं किया जो मानव और मानव के बीच भेद करती हैं। शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए उन्होंने जीवन भर संघर्ष किया।

डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि से, धर्म मानव जीवन का अनिवार्य अंग है; किन्तु सामाजिक न्याय को ध्यान में रखकर धर्म का आचरण करना चाहिए। धर्म मानव चेतना को ऊर्जा प्रदान करता है। यह मानव–मानव के बीच सम्यक् सम्बन्ध स्थापित करने में आस्था रखता है। मिथ्या धर्म मनुष्य को अलौकिक शक्तियों पर केन्द्रित कर देता है। यह सामाजिक जीवन की जीवन्त समस्याओं का समाधान स्वर्ग या ईश्वर के साम्राज्य में बताकर बाह्य पर–प्राकृतिक शक्तियों पर मनुष्य की निर्भरता को सुदृढ़ बनाता है। यह मनुष्य के भाग्य को श्रेष्ठ बतलाकर मनुष्य को निष्क्रियता की ओर अग्रसर करता है मिथ्या धर्म उसकी नियति पर बल देकर

उसकी सृजनशील शक्तियों एवं सामाजिक न्याय की सम्भावनाओं का अवरूद्ध करता है। यह अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों से मनुष्य को वंचित करता है और परिवर्तन की संघर्षशील प्रवृत्ति से विमुख करता है। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, मिथ्या धर्म सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और वैज्ञानिक प्रगति में संकट तथा विवादों को जन्म दिया है। यही कारण है कि मिथ्या धर्म मताग्रह, धर्मान्धता, हठधर्मिता, रूढ़िवाद, साम्प्रदायिकता, मजहबी उन्माद आदि रूपों में अभिव्यक्त होकर सामाजिक शन्ति एवं न्याय–व्यवस्था को छिन्न–भिन्न करता है। वह ऐसे धर्म के समर्थक थे जो मनुष्य यको 'समान व्यवहार और प्रतिष्ठा' दे सके। इसी लिए उन्होंने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। वर्तमान अध्ययन '**बौद्ध धर्म और डॉ. अम्बेडकर**' विषय पर आधारित है।

अध्ययन सौविध्य की दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। यथा –

प्रथम अध्याय 'भूमिका' है। इसके अन्तर्गत ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं भीमराव अम्बेडकर का जीवन–वृत्त प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'बौद्ध धर्म के अभ्युदय की पृष्ठभूमि' है। बौद्ध धर्म के अभ्युदय की पृष्ठभूमि में उपनिषदों का विशेष महत्व रहा है। इनके अतिरिक्त कई प्रकार के मत मतान्तर, धार्मिक विचार प्रचलित थे जिनका वर्तमान अध्याय इसकी विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करता है।

तृतीय अध्याय 'गौतम बुद्ध का जीवन चरित एवं शिक्षायें' है। बौद्ध–धर्म एवं दर्शन के संस्थापक महात्मा गौतम बुद्ध सर्वप्रसिद्ध हैं। गौतम गुद्ध कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी कुँज में जहाँ अब नेपाल की घनी तराई है ई.पू. 560 के आस–पास पैदा हुए थे। उनके पिता शुद्धोदन शाक्य वंश के राजा थे, उनकी माँ का नाम रानी महामाया था। बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था। तत्त्वज्ञान अर्थात् बोधि प्राप्त कर लेने के बाद वे बुद्ध की संज्ञा से विभूषित किये गये । बुद्ध के सारे

उपदेश चार आर्य–सत्यों में सन्निहित हैं। ये चार आर्य सत्य इस प्रकार हैं – संसार दुःखों से परिपूर्ण है, दुःखों का कारण भी है, दुःखों का अन्त सम्भव है, दुःखों के अन्त का मार्ग है। वर्तमान अध्याय में गौतम बुद्ध के जीवन चरित एवं शिक्षाओं पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय 'बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पूर्व डॉ. अम्बेडकर के धार्मिक विश्वास' है। डॉ. अम्बेडकर का धार्मिक चिन्तन उनके पूर्ववर्ती समाज सुधारकों से भिन्न है। उनकी मान्यतायें कुछ विशेष परिस्थितियों की उपज है उन पर समसामयिक स्थितियों का प्रभाव था जिसके कारण उनके दर्शन की विविध अभिव्यक्तियाँ भारतीय क्षितिज पर सामने आयी। बीसवीं सदी के भारत में दो दार्शनिक विचारधाराएँ विकसित हुई। एक समूह उन विचारकों एवं सुधारकों का था जो वर्णाश्रम धर्म के विरूद्ध कुछ न कुछ कहते हुए कई प्रकार के सुधारों के पक्ष में थे, जैसे – बाल विवाह एवं विधवा विवाह। दूसरा समूह उन समाज सुधारकों के पक्ष में था जो मूलतः वर्णाश्रम धर्म के ही विरूद्ध थे और उसे मूल रूप से समाप्त कर मौलिक सुधारों के पक्ष में थे, क्योंकि वे जातिवाद को विभिन्न सामाजिक बुराइयों की जड़ मानते थे। डॉ. अम्बेडकर ने न केवल वर्ण–व्यवस्था के सिद्धान्त का ही गहन अध्ययन किया अपितु उसके अमानवीय एवं घृणित व्यवहार का भी शिकार होना पड़ा। इस प्रकार सिद्धान्त एवं व्यवहार की कसौटी पर कसकर डॉ. अम्बेडकर ने वर्णवाद को परखा, और उसकी व्याख्या प्रस्तुत की। वर्तमान अयाय में बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पूर्व डॉ. अम्बेडकर के धार्मिक विश्वासों पर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत की गयी है।

पंचम अध्याय 'अम्बेडकर का धर्मान्तरण' है। डॉ. अम्बेडकर ने अनुसूचित जातियों के लोगों का ऐसे धर्म को चुनने के लिए आह्वान किया जो उन्हें 'समान व्यवहार और प्रतिष्ठा' दे सके। डॉ. अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को उन्होंने नागपुर में एक विशाल समारोह में

बौद्धधर्म की दीक्षा ली। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका बौद्ध धर्म वैसे ही होगा जिसका बुद्ध ने स्वयं प्रचार किया और जो सिद्धान्त उन्होंने स्वयं बताए। हम हीनयान महायान के पृथकताओं में नहीं फैलेंगे अपितु बुद्ध या अर्थात् बुद्ध की ओर से दिये धर्म पर ही चलेंगे। वर्तमान अध्याय में उनकी दलि राजनीति को उद्घाटित करते हुए अम्बेडकर के धर्मान्तरण पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

षष्ठ अध्याय 'अम्बेडकर की दृष्टि में बौद्ध धर्म' है। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध ने एक नवीन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। जिसका सीधा सम्बन्ध मनुष्य एवं समाज से हैं। उनके अमानववाद का मूलाधार मनुष्य, समाज एवं प्रकृति है। मनुष्य, समाज एवं प्रकृति के मिश्रित स्वरूप के आधार पर उन्होंने एक स्वतन्त्र नीतिशास्त्र अथवा नैतिकता का प्रतिपादन किया। वर्तमान अध्याय में अम्बेडकर की दृष्टि में बौद्ध धर्म पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

सप्तम अध्याय 'उपसंहार' है। मनुष्य का दुःख मनुष्य की असमता की भावना के कारण है। केवल सदाचार के द्वारा ही असमता एवं उससे फलित दुःख का अन्त हो सकता है।

ये धम्मा हेतुप्पभवा,
तेसं हेतु तथागतो आह।
ते सञ्य यो निरोधो,
एवं वाद महासमणोति।।

'हेतु अर्थात् कार्य–कारण से उत्पन्न होने वाली जितनी वस्तुएँ हैं, उनका हेतु है, यह तथागत बतलाते हैं। उनका जो निरोध है उसको भी बतलाते हैं, यही महाश्रमण (बुद्ध) का वाद है।' इसे बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने उजागर किया और देश की पद–दलित जनता का मार्गदर्शन किया।

कुन्दन कुमार सिंह

आभार

बाबा विश्वनाथ की असीम अनुकम्पा, गुरुजनों के विद्वत्तापूर्ण मार्गदर्शन, सुहृदजनों के आशीर्वाद एवं सहयोगियों के सहयोग से वर्तमान अध्ययन अपनी पूर्णता को प्राप्त कर सका है। इस पुनीत अवसर पर मैं आप सब के प्रति आभार ज्ञापित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

सर्वप्रथम मैं अपने निर्देशक पूज्य गुरुवर **प्रो. शैलेन्द्र प्रसाद पांथरी** जी के प्रति नतमस्तक हूँ, जिनके विद्वत्तापूर्ण मार्गदर्शन में प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध अपनी पूर्णता को प्राप्त कर सका। आपका का आशीर्वाद व स्नेह सदैव बना रहे यही ईश्वर से कामना करता हूँ।

मैं आदरणीय गुरुजन **डॉ. झिनकू यादव**, निदेशक, राष्ट्रीय मानव संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी, **डॉ. शम्भूनाथ शास्त्री**, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, जगतपुर पी.जी. कॉलेज, जगतपुर, वाराणसी के प्रति उनके सहयोग एवं विद्वत्तापूर्ण सुझावों हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। साथ ही मैं अपने महाविद्यालय के प्राचार्य जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

शोध सम्बन्धी सामग्रियों के संकलन में मुझे सयाजी राव गायकवाड केन्द्रीय ग्रन्थालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; कारमाइकल ग्रन्थालय, वाराणसी; डॉ. भगवानदास ग्रन्थालय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी; केन्द्रीय ग्रन्थालय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी; राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली; राष्ट्रीय मानव संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी आदि मानिन्द संस्थाओं से उल्लेखनीय सहयोग मिला। सम्बन्धित अधिकारियों और कर्मचारियों के स्नेहपूर्ण सहयोग के लिए मैं इन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं अपने प्रातः स्मरणीय पूज्य पिता जी **स्व. कैलाश सिंह** एवं पूजनीया माता **श्रीमती राजकुमारी सिंह** के प्रति नतमस्तक हूँ, जिनका आशीर्वाद ही आज फलित हुआ है।

मैं अपने अग्रज **सर्वश्री कल्पनाथ सिंह, कपिल देव राय, राजेश्वर राय** एवं भाभियों **श्रीमती रिंकी सिंह, कल्याणी राय, कमलेश राय** के प्रति उनके सहयोग हेतु आभारी हूँ।

मैं अपनी धर्मपत्नी **श्रीमती अरूणा सिंह** के प्रति उनके सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। साथ ही अपने पुत्र **जतिन सिंह** पुत्री ज्योति सिंह के प्रति स्नेह ज्ञापित करता हूँ।

मैं परिवार के अन्य सदस्यों **योगेन्द्रकुमार सिंह, देवेन्द्र सिंह, रजत कुमार सिंह, राहुल कुमार कौशिक, साहिल सिंह, कामिनी राय, मानवेन्द्र कुमार सिंह** के प्रति स्नेहपूर्ण धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

अन्त में प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के कम्प्यूटर टाइपिंग हेतु **श्री देवेन्द्र कुमार** (शिवम् कम्प्यूटर, मानस मंदिर, वाराणसी) के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

कुन्दन कुमार सिंह

विषयनुक्रमणिका

		पृष्ठ–संख्या
अध्याय : 1	भूमिका	1 – 69
	(क) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	
	(ख) भीमराव अम्बेडकर का जीवन–वृत्त	
अध्याय : 2	बौद्ध धर्म के अभ्युदय की पृष्ठभूमि	70 – 92
अध्याय : 3	गौतम बुद्ध का जीवन चरित एवं शिक्षायें	93 – 133
अध्याय : 4	बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पूर्व डॉ. अम्बेडकर के धार्मिक विश्वास	134 – 160
अध्याय : 5	अम्बेडकर का धर्मान्तरण	161 – 234
अध्याय : 6	अम्बेडकर की दृष्टि में बौद्ध धर्म	235 – 266
अध्याय : 7	उपसंहार	267 – 275
	सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची	276 – 291